REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 12 | SEPTEMBER - 2018

भील जनजाति का सामाजिक अध्ययन

डॉ. श्वेता तिवारी

सारांश –

प्रस्तुत शोध पत्र भील जनजाति के सामाजिक अध्ययन से सम्बन्धित है। उक्त शोध पत्र में भील जनजाति की सामाजिक स्थिति का वर्णन किया गया है।

प्रस्तावना –

भारतीय समाज के सामाजिक संगठन की जड़े जनजाति समाज व्यवस्था में निहित हैं। इसलिए समाज वैज्ञानिकों सामाजिक अध्ययनों के लिये जनजाति समाज की ओर उन्मुख होना पड़ता है। लेकिन परिवर्तन की सर्वव्यापकता से यह सामाजिक व्यवस्था भी अछूती होती है। इसके प्रभाव से वे विशिष्टताऐं जो कभी उनकी पहचान होती हैं वे अब परिवर्तन के फलस्वरूप समाज की धरोहर बनती जा रही है। अतः न्यून आवश्यकताओं में सरल जीवन बिताने वाली जनजातियां सामाजिक जीवन परिवर्तन के दौर में है।

सामाजिक संगठन के अंतर्गत सामाजिक जीवन के मूल तत्व व संस्थागत नियम समाहित होते हैं। ये सभी व्यक्ति के व्यवहारों तथा विकास योजनाओं के प्रति उनकी मनोवृत्तियों को स्पष्ट करते हैं। इन तत्वों को अध्ययन में समाविष्ट कर हम पुरातन परम्पराओं से बंधे जनजाति समाज पर शासकीय योजनाओं के प्रभाव को देख सकते हैं। इस प्रकार के विश्लेषण से सामाजिक विकास के अनछुए पहलुओं तथा जनजाति के सामाजिक पिछड़ेपन की कमजोर कड़ियाँ उजागर होती है। वस्तुतः यह अध्ययन को मजबूत पक्ष प्रदान करता है।

परिवारिक संरचना –

जनजातीय परिवार यह मूल्य आधार है, जिस पर व्यक्ति के कल्याण का भावी भवन निर्मित होता है। सामाजिक जीवन की श्रृंखला में परिवार ऐसी कड़ी है, जहां व्यक्ति के रहन–सहन की विधियां, उसके विश्वास, मूल्य, दृष्टिकोण और मानसिक चेतना विकसित होती है। यह एक ऐसा मजबूत स्तंभ है जिससे समाज की विभिन्न, संस्थाएं व एजेन्सियां जुड़ी है। अतः परिवार में होने वाले परिवर्तनों का प्रभाव समाज पर प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देता है। भील परिवारों के अतीत व वर्तमान स्वरूप को देखने पर लगता है कि परिवार संस्था विकासीय क्रम से गुजरी है। यहां संयुक्त परिवार शनैः शनैः एकाकी परिवार में परिवर्तित हो रहे हैं इस क्रम में पिछले दशकों में हुए जनजातीय विकास कार्यक्रमों और आरक्षण योजनाएं सहायक सिद्ध हुई है जिससे भीलों की सामाजिक संरचना में कई परिवर्तन घटि हो रहे हैं।

भारतीय सामाजिक परम्परा के अनुरूप भीलों में भी पितृसत्तात्मक परिवार पाये जाते हैं। यहां भी पिता परिवार का मुखिया होता है, लेकिन वर्तमान में भीलों में पिता के अधिकारों में शिथिलता देखने को मिली है। जो तेजी से बढ़ रहे एकाकी परिवारों का प्रमुख कारण है। भीलों में संयुक्त परिवार के विघटन होने को प्रमुख कारण भीलों की स्वतंत्र रहने और प्रवर्जन करने की प्रकृति है।

भीलों में तेजी से विघटित हो रहे संयुक्त परिवार के अध्ययन में 3 प्रमुख उत्तरदायी कारण सामने आये हैं –

1) स्वतंत्र स्वभाववृत्ति
2) प्रर्वजन
3) बदलता दृष्टिकोण

भील हमेशा से उन्मुक्त जीवन पसंद करते हैं। किसी भी बाध्यता व दबाव की स्थिति में वे अपना घर छोड़कर पिता से अलग अन्यत्र अपना झोपड़ा बना लेते हैं। यह स्थिति पिता के अधिकारों में आ रही शिथिलता की द्योतक है

कई बार भील परिवारों को काम की तलाश में समीप के राज्यों और शहरों में जाना पड़ता है। जब विवाहित पुरुष राहत मजदूरी के लिये शहर के बाहर जाते हैं तब वे अपनी पत्नी व बच्चों को भी साथ ले जाते हैं। इस प्रकार उन्हें अपने पैतृक परिवार से अलग होना पड़ता है।

आरक्षण और जनजातीय विकास योजनाओं के कारण शिक्षा और शासकीय नौकरियों में मिली सुविधाओं से युवाओं को अपने परिवार को छोड़कर अन्य स्थान पर जाना पड़ता है जब वे जनजातीय युवा बाह्य समाज के सम्पर्क में आते हैं तब वे अपने समाज के प्रति हीनभाव रखने लगते हैं इस प्रकार शहरी आकर्षण और बाह्य समाज के सम्पर्क के फलस्वरूप युवाओं का अपने समाज के प्रति दृष्टिकोण बदल रहा है।

उपरोकत परिवर्तन के परिणामस्वरूप वे ग्रामों की अपेक्षा शहरों की ओर उन्मुख होने लगे हैं। इस शहरी आकर्षण और स्थान परिवर्तन के कारण इनके सामाजिक जीवन में पारिवारिक विघटन की स्थिति निर्मित हुई है।

विवाह –

भीलों में विवाह प्रकार्यात्मक अथवा उपयोगितावादी दृष्टिकोण के आधार पर यौन व्यवहारों को संचालित करने वाली संस्था है। इनमें यौन–सम्बन्ध नैतिकता के विषय में अन्य समाजों की तुलना में अधिक लचीले पाये जाते हैं। इस संबंध में भील उदार दृष्टिकोण रखते हैं। अतः समाज की अपेक्षा भीलों में विवाह का औचित्य बढ़ जाता है।

भील प्रायः एक विवाही होते हैं। कहीं–कहीं बहु–विवाह भी प्रचलन में देखा गया है, जो कि भीलों के लिये आर्थिक समृद्धता का द्योतक है। बड़वानी जिले में आर्थिक तंगी से बदहाल भीलों में वधू मूल्य चुकाने में असमर्थ भील एक विवाही हैं।

झाबुआ के भीलों की अपेक्षा पश्चिम निमाड़ के भीलों में एक विवाह अधिक प्रचलित है जिसका कारण वधू मूल्य का पाया जाना है। यह विवाह के समय वर पक्ष द्वारा वधू पक्ष को पिता द्वारा लिया जाता है। पहले यह मूल्य सेवा के रूप में था, किन्तु मुद्रा के प्रचलन से अब वधू मूल्य रूपयों में लिया जाने लगा है, समय के साथ भीलों में यह धनराशि बढ़ती जा रही है। इस कारण इस क्षेत्र में एक विवाह ही प्रचलित है।

भीलों में विवाह संबंधी नियमों में अंर्तविवाह व गौत्र बर्हिविवाह का प्रचलन है। यह जनजाति समूह अंतर्विवाही हैं। इनमें विवाह अपनी ही उपजाति वर्ग में होते हैं। अन्य जातियों के साथ यह लोग वैवाहिक संबंध नहीं करते हैं। इनमें विवाह संबंधी निषेध भी पाये जाते हैं जिनमें गोत्र व ग्राम/फलिया बर्हिविवाही प्रमुख होते हैं। भील समुदाय ममरे–फुफेरे भाई बहन में विवाह तथा स्वगोत्र विवाह को बुरा मानते हैं। विवाह में गौत्र मिलाते समय ये 3–4 पीढ़ियों के गोत्रों को छोड़कर मिलान करते हैं। ये लोग एक ही ग्राम/फलिया के लड़के –लड़कियों के मध्य विवाह को सामान्यतः टालते है।

भीलों में विवाह के कई स्वरूप है यथा सेवा विवाह, अपहरण विवाह या भगाकर परम्परित विवाह, औपचारिक विवाह, लुगड़ा–लाड़ी विवाह, आई बाराई विवाह होते हैं, जिनमें परम्परित व अपहरण/भगाकर ले जाने वाले विवाह को अपने अध्ययन में शामिल किया है।

विवाह के ये दोनों प्रकार सर्वाधिक देखे गये हैं।

परम्परित विवाह विधि –

इस प्रकार का विवाह मंगनी, बाने बैठना, पैरावी, कुलदेवी की पूजा की विधि, बारात, रवा नगी, लग्न, विधि, पछडन विधि, काकलड़ों घोडावणो आणा की विधि द्वारा सम्पन्न होता है। यह विवाह पूर्व निश्चित होता है। जिसका प्रारंभ मंगणी की रस्म द्वारा होता है। इन विवाहों को अर्थ सम्पन्न भील बड़ीही धूमधाम से करते हैं। जिसमें यह विवाह तडवी भीलों में अधिक देखा गया है।

भगाकर/भगोरिया/झगड़ा तोड़कर विवाह –

इस विवाह में युवक जिस लड़की से प्रेम करता है उसे भगोरिया उत्सव में गुलाल लगाकर अपने साथ भगाकर ले जाता है। तत्पश्चात् इसकी जानकारी लड़की के परिवार वालों को दे दी जाती है। लड़की का पिता वधू मूल्य की मांग करता है। ग्राम का पंच झगड़े की उचित राशि लड़की के पिता को दिलाकर विवाह को मान्यता प्रदान करता है। इस प्रकार का विवाह कई बार परियाग, विधवा व शादीशुदा औरत द्वारा भी किया जाता है।

उत्सव –

आधुनिक परिवर्तनों ने धार्मिक त्यौहारों एवं उत्सवों की गरिमा को काफी क्षति पहुंचाई है। जनजातीय सदस्यों ने अपनी धार्मिक परम्पराओं का निष्पादन सामाजिक समूहों में भगोरिया ही श्रेष्ठता लिये हुए था। परन्तु अब वे दीपावली, दशहरे को भी मनाने लगे हैं।

जनजातीय उत्सव मनोरंजन और उल्लास के झरने हैं जो आधुनिकीकरण के कारण सूखते जा रहे हैं। पहले मनोरंजन के लिए संगीत, नृत्य व कम नशीली शराब का प्रयोग होता है परन्तु अब कठिन परिश्रम से उत्पन्न थकान को मिटाने के लिए वेश्यावृत्ति एवं तेज शराब का सहारा लिया जाने लगा है। भीलों में आधुनिक मनोरंजन के साधनों में सिनेमा, टीवी व प्लेयर का प्रचलन बढ़ने लगा है।

अन्ध विश्वास –

बदली परिस्थितियों में इस क्षेत्र के आदिवासियों में अन्धविश्वास को कम किया है। विगत् वर्षा से निरन्तर सूखे की स्थिति के कारण ये आदिवासी परिवार भोजन और रोजगार की तलाश में शहरी समाज के सम्पर्क में आये है।

पहले वर्षा न होने की स्थिति में भीलों द्वारा इन्द्रदेव की पूजा, विशेष टोने–टोटकों से की जाती थी। लेकिन आज युवा होता भील बालक भी इसे अन्धविश्वास मानकर नकार रहा हैं।

वेशभूषा –

वेशभूषा में परिधान मानव के व्यक्तित्व को आकार प्रदान करते हैं चूंकि जनजातियां सदियों से प्राकृतिक परिवेश में रही है। इसलिए इनमें परिधान का चलन कम पाया जाता था लेकिन बाहरी सम्पर्क के प्रभाव से इनमें भी परिधान का चलन बढ़ने लगा है। आज के भीलों का युवा वर्ग आधुनिकता से अधिक प्रभावित है। ये लोग सहजता से पेन्ट शर्ट व टीशर्ट का प्रयोग करने लगे हैं ग्रामों में साधारण लंगोटी धारण करने वाला भील अब रेडिमेड टेरिकोट के शर्ट पहनता है। कस्बाई, भील, धोती, बण्डी कमीज और साफा पहनता है। आधुनिक वेशभूषा से अपनी भीली बालाओं को देखा कि वे सभी फ्रॉक, सलवार, कमीज, स्कर्ट तथा कटे बालों में सजी हुई थी। इन भील बालिकाओं की आधुनिक शैली भविष्य की गैर आदिम समाज की युवतियां की छवि को साकार करती है।

भाषा –

भाषा मनुष्य के बौद्धिक विकास का परिणाम है। यह विचार सम्प्रेषण का ऐसा सशक्त माध्यम है जिससे व्यक्ति–व्यक्ति से जुड़कर समूह, समुदाय और समाज से जुड़ता है। प्रत्येक समाज की अपनी भाषा होती है। यह उसे अन्य समुदाय से पृथक और अलग पहचान देती है। भाषाओं की विविधता का एक अलग संसार है। जिसमें आदिवासी भाषाएं भी अपना एक मुकाम रखती है।

आदिवासी भीली भाषा अपनी अनोखी शैली ओर मौलिकता खोती जा रही है। प्रत्येक क्षेत्र में निवास करने वालों की भाषा एक विशेषता व क्षेत्र की पहचान लिये होती है जिसका प्रभाव भाषा के उच्चारण पर दिखाई पड़ता है। भीली भाषा पर यह क्षेत्रीय प्रभाव देखा जा सकता हैं देश के विभिन्न क्षेत्रों में निवास करने वाले भीलों की बोली उच्चरण में ठीक हैं भीली भाषा सम्पूर्ण भील क्षेत्र में बोली जाती है परन्तु उच्चारण में फर्क है। इसके उच्चारण में क्षेत्रीयता का पुट देखने को मिलता है। भीली भाषा पर गुजराती, मराठी, मालवी, निमाड़ी

और मेवाड़ी बोलियों के प्रभाव है जिससे परिणामस्वरूप भीली, भाषा में इन क्षेत्रीय बोलियों के शब्दों का निर्बाध प्रयोग हो रहा है।

संदर्भ सूची –

1) अम्बेडकर और सामाजिक न्याय, मानव पब्लिकेशन, नई दिल्ली 1994
2) झाबुआ के आदिवासी – डॉ. राजेन्द्र जैन
3) लोक प्रशासन –बी. एल. फडिया – 1996
4) भारतीय संविधानिक विधि, इलाहाबाद लॉ एजेन्सी पब्लिकेशन 1990 – एम. पी. जैन
5) आरक्षण : सामाजिक न्याय एवं राजनैतिक संतुलन, रावत पब्लिकेशन जयपुर – अनिरूद्ध प्रसाद
6) भील संस्कृति, म. प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल 1998 – अशोक पाटील
7) भारतीय समाज एवं संस्कृति – राजकुमार
8) जनजाति जीवन और संस्कृति, सहचरी प्रकाशन, कानपुर 1967 – राजीव लोचन शर्मा
9) ग्रामीण समाज शास्त्र – डॉ. अशोक सचदेव
10) शिक्षा : दिशा और दृष्टिकोण, प्रवीण प्रकाशन, नई दिल्ली 2001 – डॉ. शंकरदयाल शर्मा
11) म. प्र. की जनजाति समाज एवं व्यवस्था, म. प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल
12) भीलों की सामाजिक व्यवस्था क्लासिकल पब्लिकेशन नई दिल्ली 1995 डॉ. एम.एलवर्मा
13) सामाजिक अनुसंधान और सर्वेक्षण
14) जनजातीय मिथक एवं यथार्थ – वैद्य नरेश कुमार
15) भारत का संविधान – डॉ. ए. बी. शर्मा